Durga Chalisa

नमो नमो दुर्गे सुख करनी !
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी !! 1

निरंकार है ज्योति तुम्हारी !
तिहूँ लोक फैली उजियारी !! 2

शशि ललाट मुख महाविशाला !
नेत्र लाल भृकुटि विकराला !! 3

रूप मातु को अधिक सुहावे !
दरश करत जन अति सुख पावे !! 4

तुम संसार शक्ति लै कीना !
पालन हेतु अन्न धन दीना !! 5

अन्नपूर्णा हुई जग पाला !
तुम ही आदि सुन्दरी बाला !! 6

प्रलयकाल सब नाशन हारी !
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी !! 7

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें !
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें !! 8

रूप सरस्वती को तुम धारा !
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा !! 9

धरयो रूप नरसिंह को अम्बा !
परगट भई फाड़कर खम्बा !! 10

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो !
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो !! 11

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं !
श्री नारायण अंग समाहीं !! 12

क्षीरसिन्धु में करत विलासा !
दयासिन्धु दीजै मन आसा !! 13

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी !
महिमा अमित न जात बखानी !! 14

मातंगी अरु धूमावति माता !
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता !! 15

श्री भैरव तारा जग तारिणी !
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी !! 16

केहरि वाहन सोह भवानी !
लांगुर वीर चलत अगवानी !! 17

कर में खप्पर खड्ग विराजै !
जाको देख काल डर भाजै !! 18

सोहै अस्त्र और त्रिशूला !
जाते उठत शत्रु हिय शूला !! 19

नगरकोट में तुम्हीं विराजत !
तिहुँलोक में डंका बाजत !! 20

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे !
रक्तबीज शंखन संहारे !! 21

महिषासुर नृप अति अभिमानी !
जेहि अघ भार मही अकुलानी !! 22

रूप कराल कालिका धारा !
सेन सहित तुम तिहि संहारा !! 23

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब !
भई सहाय मातु तुम तब तब !! 24

अमरपुरी अरु बासव लोका !
तब महिमा सब रहें अशोका !! 25

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी ! 26
तुम्हें सदा पूजें नरनारी !!

प्रेम भक्ति से जो यश गावें !
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें !! 27

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई !
जन्ममरण ताकौ छुटि जाई !! 28

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी !
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी !! 29

शंकर आचारज तप कीनो !
काम अरु क्रोध जीति सब लीनो !! 30

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को !
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको !! 31

शक्ति रूप का मरम न पायो !
शक्ति गई तब मन पछितायो !! 32

शरणागत हुई कीर्ति बखानी !
जय जय जय जगदम्ब भवानी !! 33

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा !
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा !! 34

मोको मातु कष्ट अति घेरो !
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो !! 35

आशा तृष्णा निपट सतावें !
मोह मदादिक सब बिनशावें !! 36

शत्रु नाश कीजै महारानी !
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी !! 37

करो कृपा हे मातु दयाला !
ऋद्धिसिद्धि दै करहु निहाला !! 38

जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ !
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ !! 39

श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै !
सब सुख भोग परमपद पावै !! 40

देवीदास शरण निज जानी !
कहु कृपा जगदम्ब भवानी !! 41

!!दोहा!!
शरणागत रक्षा करे,
भक्त रहे नि:शंक !
मैं आया तेरी शरण में,
मातु लिजिये अंक !!

!! इति श्री दुर्गा चालीसा संपूर्ण !!

durgachalisalyrics.com.in